Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

# हिंदी काव्य में अस्तित्ववाद का प्रभाव (अज्ञेय एवं मोहन राकेश के संदर्भ में)

**Anmol Kumar***

Student of MA Hindi, Fakruddin Ali Ahmed Rajkiya Degree College Mahmudabad, Sitapur, Affiliated Chhatrapati Shivaji Maharaj University, Kanpur

***सारांश –*** *अस्तित्ववाद मूलतः पश्चिमी जगत की देन है आधुनिक हिंदी साहित्य पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा है अस्तित्ववाद का हिंदी काव्य में उन्मुख सर्वप्रथम सच्चिदानंद हीरा नंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की रचना में देखने को मिलता है एक तरह से हम कह सकते हैं कि स्वतंत्र युग के पूर्व अस्तित्ववाद का स्वर हमें सुनाई देने लगा था। अज्ञेय ने अस्तित्व के चिंतन का जो स्वरूप अपनी रचनाओं में दिखाया है उस पर केवल पश्चिम जगत के अस्तित्ववाद की विचार धारा से प्रेरित होकर नहीं लिखी बल्कि मानव की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए सहज ही हृदय में उत्पन्न विचारों के अनुसार की है। अज्ञेय जी की रचनाओं में जीवन का मूल स्वर छुपा है जिसको उन्होंने मनुष्य तक पहुंचाने का प्रयास किया है। दूसरी तरफ मोहन राकेश की रचना 'आषाढ़ का एक दिन' में कालिदास की निराशा एवं स्वतंत्रता चयन के अनुसार नहीं बल्कि आर्थिक असमानता के अनुसार उनका राज्य अभिषेक की ओर बढ़ना इत्यादि के संदर्भ में हम अस्तित्ववाद का अवलोकन कर सकते हैं।*

***मूल शब्द –*** *अस्तित्ववाद का बोध, मृत्यु बोध*

----------X----------

## प्रस्तावना

अस्तित्ववाद नवयुग के लेखन के एक नये दर्शन के रूप में हमारे सामने उभरता है अस्तित्ववाद की अवधारणा पश्चिमी जगत की चिंतक कीर्केगार्ड ने 1843ई० में दी थी। साहित्य के क्षेत्र में अस्तित्ववाद को प्रतिष्ठित एवं साहित्यिक ख्याति दिलाने का श्रेय प्रसिद्धि फ्रांसीसी विचारक ज्यां पाल सार्त्र को प्राप्त है। अस्तित्ववाद फिर भी आधुनिक युग में कामू, काफ्का, सार्त्र जैसे दार्शनिक व साहित्यकारों की वजह से ही बनकर पुष्कल हो गया। तथा इसे दार्शनिक मान्यता मिल गई सार्त्र के द्वारा इसे मार्क्सवाद से जोड़ने पर इसकी लोकप्रियता और भी बढ़ गई। अस्तित्ववाद पर लिखी गई प्रमुख पुस्तकें निम्नवत हैं। सन 1964 ई०में शिव प्रसाद सिंह ने 'धर्म युग' नामक रचना की जिसमें अस्तित्ववाद दर्शन के संदर्भ में लिखा

सन 1968 ई० में महावीर दाधीच ने 'अस्तित्ववाद' शीर्षक नाम से पुस्तक लिखी थी। जिसमें अस्तित्ववाद की सभी पक्षों का वर्णन किया। योगेंद्र शाही ने 'अस्तित्ववाद कीर्केगार्द के कामू तक' पुस्तक लिखी। सन 1973 ई० में कुबेर नाथ राय ने 'विषाद योग' नामक पुस्तक अस्तित्ववाद पर लिखी। अस्तित्ववाद का अर्थ समझने का प्रयत्न करें तो रयून्स ने कहा हैं कि "अस्तित्ववाद का अर्थ है जीवित रहने की वह स्थिति जो अन्य वस्तुओं के साथ होने वाले समायोजन में निहित है"1। अस्तित्ववाद की परिभाषा के संबंध में ऐलेन का मत है कि "अस्तित्ववाद परंपरागत दर्शक की दृष्टि से ना होकर अभिनेता की दृष्टि से हैं। इस विचार- पद्धति में जीवन की समस्याओं पर विचार भुक्तभोगियों की और होता हैं"2। अस्तित्ववाद दो महायुध्दो से उत्पन्न निराशा का कारण हैं। इसके संबंध में डॉ० एम षण्मुखन का कथन हैं कि "पश्चिम में विश्व महायुध्दो से उद्भूत निराशा एवं अरक्षित भावना अस्तित्ववाद की व्यापकता के कारण बनी"3 अस्तित्ववाद दर्शन में मनुष्य मृत्यु का भय नहीं रखता हैं यह दर्शन स्वेच्छा अनुसार बिना भय के ही जीवन व्यतीत करने का मार्ग दिखाता हैं। "अस्तित्ववाद की मान्यताओं में यह तथ्य गहराई तक निहित हैं कि निराशा, पीड़ा, अकेलापन, आत्मनिर्वासन, शून्यता, संत्राश, मोहभंग,विद्रूपता, विडम्बना, बेचैनी, मृत्यु-बोध इत्यादि अस्तित्ववाद के साथ अनिवार्यता जुड़े हैं। कीर्केगार्द ने निराशा को ही चरम माना हैं।

www.ignited.in

निराशा का प्रधान हेतु ईश्वर से आत्म-अलगाव की भावना में हैं"4।

आधुनिक गद्य साहित्य में अज्ञेय जी की रचना 'शेखर एक जीवनी' हिंदी का प्रथम अस्तित्ववादी उपन्यास कहा जा सकता हैं। 'शेखर एक जीवनी 'का प्रकाशन 1940 ई० में हुआ। इसका दूसरा भाग 1944 में प्रकाशित हुआ इसके पहले भाग का प्रकाशन स्वतंत्रता युग के पहले ही हो चुका था। अज्ञेय जी का यह उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' का विषय मृत्यु की समस्या की नींव पर लिखा गया हैं। ये रचनाएँ आकस्मिक नहीं कही जा सकती क्योंकि अज्ञेय ने 1911 से 1915 की अवधि में गोमती नदी में आई बाढ और उसकी भयंकर दुरवस्था अपनी आंखों से देखी थी। और बाद में अज्ञेय का अस्तित्ववाद के प्रति लगाव बढ़ने लगा। उन्होंने 'एक बूंद सहसा उछली' में लिखा है कि "सार्त्र का साहित्यिक अस्तित्ववाद मेरे लिए विशेष आकर्षक कभी नहीं रहा लेकिन 'इसाई अस्तित्ववाद 'और 'वैज्ञानिक अस्तित्ववाद' में मेरी विशेष रुचि रही है क्योंकि मैं समझता हूँ और मानता हूँ कि यूरोप की वर्तमान मन स्थिति और संकट को समझने के लिए इन प्रवृत्तियों का अध्ययन आवश्यक हैं"5

अज्ञेय पूर्णतया मानवतावादी कवि रहें हैं। अज्ञेय के सभी मान्यताओं और विचारों का आत्यान्तिक मानदण्ड मानव ही रहा है। अज्ञेय की यह अतिशय व्यक्तिवादी दृष्टि अस्तित्ववाद की देन है। लेकिन अज्ञेय के सदा यही विचार रहें हैं कि भारतीय परिवेश में अस्तित्ववाद से भी बडे दर्शन की उद्भावना की जाये। अज्ञेय कि इस उद्भावना पर राम स्वरूप चतुर्वेदी जी कहते हैं कि "अस्तित्ववाद से अज्ञेय ने कुछ बेसिक उत्तेजना पायी हो, पर अपने समूचे उत्तरकालीन कृतित्व में लेखक का ध्यान रहा है कि भारतीय परिस्थितियों में अस्तित्ववाद से कोई बडी और अधिक संगत दृष्टि विकसित हो जाये"6

शेखर अज्ञेय की पहचान है अज्ञेय जी ने शेखर के माध्यम से ही दुःख वेदना को दिखाया है। उसके घनी भूत वेदना को केवल एक रात में देखें हुये 'विजन' शब्द को शब्द बह करने का प्रयत्न हैं। "घोर यातना व्यक्ति को दुष्ट बना देती है" 7

घोर निराशा उसे अनाशक्त बनाकर दुष्ट होने के लिए तैयार करती है। उसकी मुंह से कहीं गई बात दर्शन का रूप ले लेती है। वैयक्तिक संकट बोध ने काम्यू और काफ्का जैसे महान व्यक्तियों ने चिंतन और साहित्य में गहरा प्रभाव डाला है। यही वैयक्तिक संकट बोध (अज्ञेय जी ने शेखर की माध्यम से दिखाया है) अज्ञेय को दार्शनिकता का घोर अहम्वादी बना देता है। शेखर को गौरव का दर्शन बना देता है। विद्रोहित में अहम के साथ-साथ सतेस्त परिस्थितियों से स्वतंत्र होने की लालसा भी दृष्टव्य है शेखर के जीवन का दर्शन क्या है। अज्ञेय के शब्दों में "यों सूत्र आप चाहे तो कह दूंगा स्वतंत्र की खोज फिर आप सूत्र की व्याख्या चाहेंगे और में कहूंगा की वह शेखर है"8

अज्ञेय के दूसरे उपन्यास 'अपने अपने अजनबी' में भी मृत्यु की मंडराती गहनतम छाया में व्यक्ति के अस्तित्व और स्वतंत्रता की चर्चा की है। कि मृत्यु मानव के अस्तित्व और स्वतंत्रता को उखाड़कर फेंक देती है। मनुष्य को वरण की स्वतंत्रता नहीं हैं। या मृत्यु उसकी सीमा है। वर्ष के नीचे काठ घर में फंसी सेल्मा सोचती हैं कि मनुष्य उपेक्षित निस्सहाय, निस्पाय, एवं बेबस हैं। कालरुपी विराट शक्ति मनुष्य को अवश बनाती है और उसे बुढ़ापे के अंधेरी गुफा में धकेल देती है। उसके विकराल हस्त से रक्षा या उसकी गुलामी से छुटकारा सम्भव हैं। मृत्यु जब चाहे आ सकती है। और हमारे अस्तित्व को उखाड़ फेंक देती है इसीलिए सेल्मा योके से कहती हैं कुछ भी किसी के बस में नहीं हैं। योके। वरण की स्वतंत्रता कहीं नहीं हैं। हम कुछ भी अपनी इच्छा अनुसार नहीं चुनते हैं। इस दुनिया में रहते वास्तव में मनुष्य बहुत अकेला हैं। स्वतंत्र हे। सेल्मा कहती है "ईश्वर भी शायद स्वेच्छाचारी नहीं है उसे भी सृष्टि करनी है क्योंकि उन्माद से बचने के लिए सर्जन अनिवार्य है"9

और बाद में आखिर योके विप्यान करके उद्घोषित करती है कि "मैंनें चुन लिया है-मैंनें स्वतंत्रता को चुन लिया। मुझे याद है कभी कुछ चुनने का मौका मुझे नहीं मिला लेकिन अब मैंनें चुन लिया है जो चाहा चुन लिया में खुश हूँ।"10

दूसरी तरफ हम मोहन राकेश का नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' देखें तो हम पाते हैं कि मोहन राकेश की साहित्यिक रचनाओं में मार्क्सवाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई। जिस दर्शन ने मोहन राकेश जी के साहित्य पर प्रभाव डाला वही था, अस्तित्ववाद। मोहन राकेश ने 'आषाढ़ का एक दिन' की रचना अस्तित्ववाद से प्रभावित होकर की हैं। हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक डॉ नगेंद्र ने अस्तित्ववाद के संदर्भ में कहा हैं कि "अस्तित्ववाद दर्शन ने अपने पूर्ववर्ती दर्शन और विज्ञान की अमूर्तता पर आक्रमण किया। उसने अपने ठोस अनुभावो तथा प्रत्येक व्यक्ति के बुनियादी सवालों के साथ जोडा है। ये बुनियादी सवाल हैं-व्यक्ति की व्यग्रता, दुःख, निराशा, अकेलापन, मृत्यु बोध ,स्वतंत्रता,त्रास आदि। इसके साथ ही वह सामूहिकता और निश्चयवाद के विरुद्ध भी खड़ा हुआ। वह उन समस्त विचारों के विरुद्ध जो व्यक्ति को अ-मनुष्य और अस्तित्वहीन बनाते हैं। उसकी दृष्टि में मनुष्य स्वतंत्र है। वह न वस्तु है न मशीन है वह क्रियात्मक शक्ति है वह स्वतंत्र निर्णय लेने में समर्थ है। और इसके लिए वह खुद जिम्मेदार है"11

उपयुक्त कथन के अनुसार 'आषाढ़ का एक दिन' तुलना करें तो हम इस नाटक में निम्नलिखित तत्व पाते हैं। इस नाटक का नायक कालिदास हैं वह स्वतंत्र निर्णय लेने में असमर्थ है। वह न चाहते हुये भी उज्जयिनी को जाता है। उसकी इच्छा है कि ग्रामीण परिवेश में रहकर मल्लिका के साथ रहें अपितु आर्थिक अभाव सामाजिक तिरस्कार जैसे मनोभाव उसे गलत निर्णय(उज्जयिनी जाने के लिए)प्रेरित करते हैं। यहाँ उसके जीवन में विसंगति बोध की समस्या उत्पन्न होती है। और कालिदास निराशा, हताश भरे शब्दों में कहता है कि "अधिकार मिला, सम्मान बहुत मिला परन्तु में सुखी न हो सका..... मुझे बार बार अनुभाव होता कि प्रभुता और सुविधा के मोह में पड़कर इस क्षेत्र में अनाधिकार प्रवेश किया हैं। जिस विशाल में मुझे रहना चाहिए था उसे दूर हट आया हूँ।"12

ये विसंगतियाँ कालिदास के जीवन में निरन्तर चलने वाली छटपटाहट हैं। कालिदास एक तरफ गाँव की आत्मीयता चाहता है तो दूसरी तरफ सत्ता और सुविधा का भोग भी चाहता हैं। इस सन्दर्भ में कालिदास का कथन है कि "मैं अपने को आश्वासन देता कि आज नहीं तो कल मैं परिस्थितियों पर वश पा लूंगा और सम्मान रुप से दोनों क्षेत्रों में अपने आप को बाँट दूँगा। परन्तु में स्वयं ही परिस्थितियों के हाथों बनता और चलित होता रहा। जिस कल की मुझे प्रतीक्षा थी। वह कल कभी नहीं आया और में धीरे-धीरे खंडित होता गया। और एक दिन मैंनें पाया कि में सर्वथा टूट गया हूँ।"13

कालिदास प्रेम के लिए जब सत्ता को छोड़कर आत्मीयता की खोज में गाँव आता हैं तो यह देखता हैं कि मल्लिका ने अपने आप को विलोम के प्रति समर्पण कर चुकी है। और अब कालिदास के हाथों से दोनों चीजें निकल गयी हैं। इस तरह से लेखक ने निराशा, अकेलापन इत्यादि अस्तित्ववाद के तत्व वर्णित किये हैं।

## निष्कर्ष-

अज्ञेय ने भारतीय संस्कृति के मृत्यु सम्बन्धी विचारो तथा दाह संस्कार आदि के माध्यम से भी जीवन और सृष्टि की अनवरता का दर्शन प्रस्तुत किया हैं। व्यक्ति भारतीय चिंतन में मृत्यु को जीवन का अन्त नहीं बल्कि नित्य प्रवाह के एक अंश के रुप में समझ सकता है। और अपने जीवन को सुखी बना सकता हैं। यहाँ अज्ञेय ने स्वतंत्रता की सीमा की और हमारा ध्यान खींचा है अज्ञेय ने मानव की इस बेबसी की अभिव्यक्ति दी है। कि मनुष्य को वरण करना ही पड़ता हैं। चाहे वह मृत्यु ही क्यों न हो क्योंकि मानव वरण के लिए अभिशप्त हैं। अस्तित्ववाद ने मनुष्य को जीवन जीने के लिए एक नया स्वरूप प्रदान किया है। दूसरी तरफ मोहन राकेश ने 'आषाढ़ का एक दिन' में कालिदास के माध्यम से सत्ता एवं सर्जनात्मकता के मध्य अन्तः संघर्ष का चित्र अंकित किया हैं। यह केवल कालिदास व्दंव्द नहीं बल्कि आधुनिक मानव का भी अंतर व्दंव्द हैं। कालिदास एक ऐसा सृजनशील कवि का प्रतीक हैं जिसकी सृजनशीलता व्यवस्था के व्दारा कुचल दी जाती है।

## संदर्भ ग्रंथ

1. डी डी रयून्स, द डिक्शनरी ऑफ फिलॉसफी, पृष्ठ संख्या 102
2. सं०डॉ०धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश, भाग 1, पृष्ठ संख्या 73
3. डॉ० एम० शण्मुखन, आधुनिक हिंदी उपन्यासों पर अस्तित्ववाद का प्रभाव, पृष्ठ संख्या 355
4. डॉ०कृष्ण दत्त पालीवाल, हिंदी आलोचना के नये वैचारिक सरोकार, पृष्ठ संख्या 383
5. अज्ञेय, एक बूंद सहसा उछली, पृष्ठ संख्या 70
6. डॉ०राम स्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य की अधुनातन प्रवृत्तियाँ, पृष्ठ संख्या 05
7. अज्ञेय, नदी के व्दीप, पृष्ठ संख्या 07
8. अज्ञेय, आत्मनेपद, पृष्ठ संख्या 67
9. अज्ञेय, अपने अपने अजनबी, पृष्ठ संख्या 98
10. वही पृष्ठ संख्या 101
11. सं. डॉ. नगेन्द्र एवं डॉ०हरदयाल, 68वाँ संस्करण, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ संख्या 416
12. मोहन राकेश, आषाढ़ का एक दिन, पृष्ठ संख्या 99
13. वही पृष्ठ संख्या 100

**Corresponding Author**

**Anmol Kumar***

Student of MA Hindi, Fakruddin Ali Ahmed Rajkiya Degree College Mahmudabad, Sitapur, Affiliated Chhatrapati Shivaji Maharaj University, Kanpur

anmolkumar2091997@gmail.com